लस्सा बुखार

प्रलिमि्स के लयि:

लस्सा बुखार, ज़ूनोटकि रोग।

मेन्स के लयि:

लस्सा बुखार, संचरण और उपचार।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में एक अध्ययन में पाया गया है कि जलवायु परविर्तन अगले 50 वर्षों में लस्सा बुखार को **पश्चमि अफ्रीका** के कुछ हस्सिों, **महाद्वीप के मध्य और पूर्वी भागों** में फैलने में मदद कर सकता है।

प्रमुख बदिु:

- लस्सा बुखार के वायरस के संपर्क में आने वाले लोगों की संख्या में **600% की वृद्धि होगी।**
  - **जोखमि वाले लोगों की संख्या वर्ष 2050 तक बढ़कर 453 मलियिन और वर्ष 2070 तक 700 मलियिन** हो जाएगी, जबकि वर्ष 2022 में यह संख्या लगभग 92 मलियिन है।
- अनुमानति 80% संक्रमण हल्के या स्पर्शोन्मुख होते हैं लेकनि शेष 20% मुँह और आँत से रक्तस्राव, नमि्न रक्तचाप एवं संभावति स्थायी हानि का कारण बन सकता है।
- **तापमान, वर्षा और चरागाह क्षेत्रों की उपस्थति जैसे प्रमुख कारकों ने** लस्सा वायरस के संचरण में योगदान दयिा है।
- **यदि वायरस पारस्थितिकि रूप से उपयुक्त नए क्षेत्र** में संचारति होने में सफल हो जाता है, तो पहले दशक में इसकी वृद्धि सीमति होगी।

लस्सा बुखार:

- **परचिय:**
  - लस्सा बुखार का वायरस पश्चमि अफ्रीका में पाया जाता है और **पहली बार इसे वर्ष 1969 में नाइजीरयिा के लासा में खोजा गया था।**
  - **यह एकल-संयोजति RNA वायरस है** जो वायरस परविार एरेनावरिडि से संबंधति है।
  - यह बुखार चूहों द्वारा फैलता है और मुख्य रूप से सएिरा लयिोन, लाइबेरयिा, गनिी और नाइजीरयिा सहति पश्चमि अफ्रीकी देशों में पाया जाता है जहाँ यह स्थानकि है।
    - मास्टोमसि चूहों में इस घातक लस्सा वायरस को फैलाने की क्षमता होती है।
  - इस बीमारी से जुड़ी मृत्यु दर कम है, लगभग 1%, लेकनि कुछ व्यक्तयिों के लयि मृत्यु दर अधकि होती है, जैसे कि गर्भवती महलिाओं की तीसरी तमिाही में।
  - **यूरोपयिन सेंटर फॉर डज़िीज़ प्रविेंशन एंड कंट्रोल के अनुसार,** लगभग 80% मामले लक्षणवहिीन होते हैं, इसलयि उनकी पहचान नहीं की गई है।
- **प्रसार:**
  - इससे व्यक्ति तब संक्रमति हो सकता है जब वह कसिी **संक्रमति चूहे (ज़ूनोटकि रोग)** के मूत्र या मल से दूषति भोजन या घरेलू सामान के संपर्क में आता है।
  - यह कभी-कभी कसिी बीमार व्यक्ति के संक्रमति शारीरकि तरल पदार्थ या आँख, नाक या मुँह जैसे श्लेष्म झलिली के संपर्क में आने से दूसरे व्यक्ति में फैल सकता है।
- **लक्षण:**
  - इसके सामान्य लक्षणों में **हल्का बुखार, थकान, कमज़ोरी और सरिदर्द** शामलि हैं।
  - गंभीर लक्षणों में रक्तस्राव, साँस लेने में कठनिाई, उल्टी, चेहरे की सूजन और छाती, पीठ एवं पेट में दर्द आदि शामलि हैं।
  - लक्षणों की शुरुआत के दो सप्ताह में रोगी की मृत्यु हो सकती है, आमतौर पर बहु-अंग वफिलता के परणिामस्वरूप।

- **उपचार:**
  - **एंटीवायरल दवा 'रिबावेरिन' (Ribavirin) लस्सा बुखार के लिये एक प्रभावी उपचार** प्रतीत होती है, लेकिन बीमारी होने पर इसे तुरंत दिया जाना चाहिये।
  - वर्तमान में लासा बुखार की रोकथाम के लिये कोई लाइसेंस प्राप्त टीका नहीं है।

//

UPSC सिविल सेवा परीक्षा विगत वर्ष के प्रश्न

प्र. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. एडेनोवायरस में सिंगल-स्ट्रैंडेड डीएनए जीनोम होते हैं,जबकि रेट्रोवायरस में डबल-स्ट्रैंडेड डीएनए जीनोम होते हैं।
2. सामान्य सर्दी कभी-कभी एडेनोवायरस के कारण होती है, जबकि एड्स रेट्रोवायरस के कारण होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- मानव को संक्रमित करने वाले वायरस को एडेनोवायरस और रेट्रोवायरस के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।
- एडेनोवायरस एक प्रकार का वायरस है जिसमें कोई आवरण/झिल्ली नहीं पाई जाती है, जबकि रेट्रोवायरस में आवरण उपस्थित होता है। एडेनोवायरस में डबल-स्ट्रैंडेड रैखिक डीएनए होता है और ये दो प्रमुख कोर प्रोटीन से जुड़े होते हैं। रेट्रोवायरस एक ऐसा वायरस है जो आरएनए को अपनी आनुवंशिक सामग्री के रूप में उपयोग करता है। जब रेट्रोवायरस किसी कोशिका को संक्रमित करता है, तो यह अपने जीनोम की एक डीएनए प्रतिलिपि बनाता है जिसे मेज़बान कोशिका के डीएनए के साथ मिलाया जाता है। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**

- एडेनोवायरस आम वायरस हैं जो कई तरह की बीमारियों का कारण बनते हैं। वे सर्दी जैसे लक्षण, बुखार, गले में खराश, ब्रोंकाइटिस, निमोनिया, दस्त और गुलाबी आँख (नेत्रश्लेष्मलाशोथ) पैदा कर सकते हैं। जबकि रेट्रोवायरस कई मानव रोगों जैसे- कैंसर और एड्स के कुछ रूपों का कारण बन सकते हैं। **अत: कथन 2 सही है।**

अतः विकल्प (b) सही उत्तर है।

स्रोत: डाउन टू अर्थ

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/lassa-fever-1